10 मैथिलीशरण गुप्त

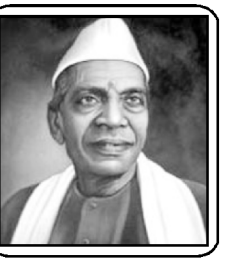

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव, जिला झाँसी में 3 अगस्त, सन् 1886 ई0 में हुआ था। काव्य-रचना की ओर बाल्यावस्था से ही इनका झुकाव था। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से इन्होंने हिन्दी काव्य की नवीन धारा को पुष्ट कर उसमें अपना विशेष स्थान बना लिया था। इनकी कविता में देश-भक्ति एवं राष्ट्र-प्रेम की व्यंजना प्रमुख होने के कारण इन्हें हिन्दी-संसार ने 'राष्ट्रकवि' का सम्मान दिया। राष्ट्रपति ने इन्हें संसद्-सदस्य मनोनीत किया। भारती का यह साधक 12 दिसम्बर, सन् 1964 ई0 में गोलोकवासी हो गया।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—3 अगस्त, सन् 1886 ई0।
- **जन्म-स्थान**—चिरगाँव (झाँसी)।
- **पिता**—सेठ रामचरण गुप्त।
- **मृत्यु**—12 दिसम्बर, सन् 1964 ई0।
- **लेखन विधा**—काव्य।
- **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक तथा परिमार्जित खड़ीबोली।
- **शैली**—प्रबन्धात्मक, अलंकृत उपदेशात्मक, विवरणात्मक, मिश्र।
- **प्रमुख रचनाएँ**—भारत-भारती, साकेत, यशोधरा, द्वापर, किसान, जयभारत, विष्णुप्रिया, पंचवटी, सिद्धराज, अनघ, रंग में भंग, झंकार, हिन्दू, वनवैभव, नहुष, मौर्य-विजय, कुणाल गीत, मेघनाद वध, विरहिणी, वज्रांगना, झंकार, पृथ्वीपुत्र, प्लासी का युद्ध आदि।
- **साहित्य में स्थान**—राष्ट्रकवि के रूप

गुप्तजी की रचना-सम्पदा विशाल है। इनकी विशेष ख्याति रामचरित पर आधारित महाकाव्य **'साकेत'** के कारण है। **'जयद्रथ वध', 'भारत-भारती', 'अनघ', 'पंचवटी', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'सिद्धराज'** आदि गुप्तजी की अन्य प्रसिद्ध काव्य-कृतियाँ हैं। **'यशोधरा'** एक चम्पूकाव्य है जिसमें गुप्त जी ने महात्मा बुद्ध के चरित्र का वर्णन किया है।

गुप्त जी का पहला काव्य-संग्रह **'भारत-भारती'** है, जिसमें भारत की कुदशा का बयान हुआ है। माइकेल मधुसूदन की वीरांगना, विरहिणी ब्रजांगना, मेघनाद-वध और नवीन चन्द्र के पलाशीर युद्ध का इन्होंने अच्छे पद्यमय अनुवाद किये हैं। देश के कालानुसार बदलती भावनाओं तथा विचारों को भी अपनी रचना में स्थान देने की इनमें क्षमता है। छायावाद के आगमन के साथ गुप्तजी की कविता में भी लाक्षणिक वैचित्र्य और मनोभावों की सूक्ष्मता की मार्मिकता आयी। गुप्तजी का झुकाव भी गीति-काव्य की ओर हुआ। प्रबन्ध के भीतर ही गीति-काव्य का समावेश करके गुप्तजी ने भाव-सौन्दर्य के मार्मिक स्थलों से परिपूर्ण 'यशोधरा' और 'साकेत' जैसे उत्कृष्ट काव्य-कृतियों का सृजन किया। गुप्तजी के काव्य की यह प्रधान विशेषता है कि गीति-काव्य के तत्त्वों को अपनाने के कारण उसमें सरसता आयी है, पर प्रबन्ध की धारा की भी उपेक्षा नहीं हुई। गुप्तजी के कवित्व के विकास के साथ इनकी भाषा का बहुत परिमार्जन हुआ। उसमें धीरे-धीरे लाक्षणिकता, संगीत और लय के तत्त्वों का प्राधान्य हो गया।

राष्ट्र-प्रेम गुप्तजी की कविता का प्रमुख स्वर है। 'भारत-भारती' में प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रेरणाप्रद चित्रण हुआ है। इस रचना में व्यक्त स्वदेश-प्रेम ही इनकी परवर्ती रचनाओं में राष्ट्र-प्रेम और नवीन राष्ट्रीय भावनाओं में परिणत हो गया। इनकी कविता में आज की समस्याओं और विचारों के स्पष्ट दर्शन होते हैं। गाँधीवाद तथा कहीं-कहीं आर्य समाज का प्रभाव भी उन पर पड़ा है। अपने काव्यों की कथावस्तु गुप्तजी ने आज के जीवन से न लेकर प्राचीन इतिहास अथवा पुराणों से ली है। ये अतीत की गौरव-गाथाओं को वर्तमान जीवन के लिए मानवतावादी एवं नैतिक प्रेरणा देने के उद्देश्य से ही अपनाते हैं।

गुप्तजी की चरित्र कल्पना में कहीं भी अलौकिकता के लिए स्थान नहीं है। इनके सारे चरित्र मानव हैं, उनमें देव और दानव नहीं हैं। इनके राम, कृष्ण, गौतम आदि सभी प्राचीन और चिरकाल से हमारी श्रद्धा प्राप्त किये हुए पात्र हैं, इसीलिए वे जीवन-प्रेरणा और स्फूर्ति प्रदान करते हैं। 'साकेत' के राम 'ईश्वर' होते हुए भी तुलसी की भाँति 'आराध्य' नहीं, हमारे ही बीच के एक व्यक्ति हैं।

नारी के प्रति गुप्तजी का हृदय सहानुभूति और करुणा से आप्लावित है। 'यशोधरा', 'उर्मिला', 'कैकेयी', 'विधृता', 'रानकदे' आदि नारियाँ गुप्तजी की महत्त्वपूर्ण सृष्टि हैं। 'साकेत' में उर्मिला तथा 'यशोधरा' में गौतम-पत्नी यशोधरा को भारतीय नारी-जीवन के आदर्श की प्रतिमाएँ बताते हुए उनकी त्याग-भावना एवं करुणा को बड़े ही सरल एवं सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। इनकी निम्न दो पंक्तियाँ हिन्दी काव्य की अमर निधि हैं—

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

गुप्तजी की भाव-व्यंजना में सर्वत्र ही जीवन की गम्भीर अनुभूति के दर्शन होते हैं। इन्होंने कल्पना का आश्रय तो लिया है, पर इनके भाव कहीं भी मानव की स्वाभाविकता का अतिक्रमण नहीं करते। इनके काव्य में सीधी और सरल भाषा में इतनी सुन्दर भाव-व्यंजना हो जाने का एकमात्र कारण जीवन की गम्भीर अनुभूति ही है। गुप्तजी खड़ीबोली को हिन्दी कविता के क्षेत्र में प्रतिष्ठित करनेवाले समर्थ कवि के रूप में विशेष महत्त्व रखते हैं। सरल, शुद्ध, परिष्कृत खड़ीबोली में कविता करके इन्होंने ब्रजभाषा के स्थान पर उसे समर्थ काव्य-भाषा सिद्ध कर दिखाया। स्थान-स्थान पर लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोगों से इनकी काव्य-भाषा और भी जीवन्त हो उठी है। प्राचीन एवं नवीन सभी प्रकार के अलंकारों का गुप्तजी के काव्य में भाव-सौन्दर्यवर्धक स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। सभी प्रकार के प्रचलित छन्दों में इन्होंने काव्य-रचना की है।

गुप्तजी युगीन चेतना और इसके विकसित होते हुए रूप के प्रति सजग थे। इसकी स्पष्ट झलक इनके काव्य में मिलती है। राष्ट्र की आत्मा को वाणी देने के कारण ये राष्ट्र-कवि कहलाये और आधुनिक हिन्दी काव्य की धारा के साथ विकास-पथ पर चलते हुए युग-प्रतिनिधि कवि स्वीकार किये गये। इन्होंने राष्ट्र को जगाया और उसकी चेतना को वाणी दी। हिन्दी काव्य को शृंगार रस की दलदल से निकालकर उसमें राष्ट्रीय भावों की पुनीत गंगा बहाने का श्रेय गुप्त जी को ही है। ये सच्चे अर्थों में आधुनिक भारत के राष्ट्रकवि थे।

●●

भारत माता का मंदिर यह

भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

जाति-धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ।
राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का,
सुलभ एक सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।

नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उन्माद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।

रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने
मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर
एक चरित्र बना लें हम।

बैठो माता के आँगन में
नाता भाई-बहन का
समझे उसकी प्रसव वेदना
वही लाल है माई का
एक साथ मिल बाँट लो
अपना हर्ष विषाद यहाँ है,
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
मिला सेव्य का हमें पुजारी

सकल काम उस न्यायी का
मुक्ति लाभ कर्तव्य यहाँ है
एक एक अनुयायी का
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर
उठे एक जयनाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) भारत माता का मन्दिर यह.....गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।
   (ख) नहीं चाहिए बुद्धि बैर की.....सबको मित्र बना लें हम।
   (ग) रेखायें प्रस्तुत हैं अपने.....पावें सभी प्रसाद यहाँ।
   अथवा बैठो माता के आँगन में .....पावें सभी प्रसाद यहाँ। **(2019AB)**
   (घ) मिला सेव्य का हमें पुजारी.....पावें सभी प्रसाद यहाँ।
   (ङ) सब तीर्थों का.....चरित्र बना लें हम। **(2020MA)**
2. मैथिलीशरण गुप्त का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
अथवा मैथिलीशरण गुप्त का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए। **(2019AC, 20MF)**
3. मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. मैथिलीशरण गुप्त की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं और शैली पर प्रकाश डालिए।
5. 'भारतमाता का मन्दिर यह' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
6. 'भारतमाता का मन्दिर यह' शीर्षक कविता की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
7. 'भारतमाता का मन्दिर यह' कविता का केन्द्रीय भाव क्या है?

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

1. मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।
2. राष्ट्रप्रेम पर आधारित कवियों की एक सूची तैयार कीजिए।

टिप्पणी

➨ भारतमाता का मन्दिर यह

संवाद = चर्चा। **सुलभ** = सरल, सहज। **गौरव** = महत्त्व, बड़प्पन। **बैर** = शत्रुभाव, दुश्मनी। **समता** = समानता। **कल्याण** = भलाई। **शिव** = कल्याण। **प्रसाद** = कृपा। **व्यवधान** = बाधा। **आदर** = सम्मान। **सम सम्मान** = बराबर सम्मान। **भिन्न-भिन्न** = विविध। **बैर** = दुश्मनी। **हृदय** = दिल। **अजातशत्रु** = जिसका कोई शत्रु न पैदा हुआ हो। **मित्र** = दोस्त। **वेदना** = कष्ट। **हर्ष** = खुशी। **विषाद** = कष्ट। **कोटि-कोटि** = करोड़ों। **अनुयायी** = अनुसरण करने वाले। **जयनाद** = विजय स्वर। **संप्रदाय** = धार्मिक मत या सिद्धान्त। **स्वागत** = किसी के आगमन पर कुशल-प्रश्न आदि के द्वारा हर्ष प्रकाश अगवानी। **सुलभ** = जो सरलता से मिल जाए। **भव** = संसार। **बुद्ध** = विकास, उन्नति। **उन्माद** = अत्यधिक अनुराग। **लाल** = पुत्र। **सेव्य** = सेवा करने योग्य। **भला** = नेक, अच्छा। **प्रेम** = प्यार, स्नेह।

●●